एपिसोड 34

"जज़्बाती रोबोट"

आलेख: Dr. Sukanya Datta
हिंदी अनुवाद: Shriniwas Oli
संकल्पना और समन्वय: Dr. B.K. Tyagi

तकनीकी विकास के साथ-साथ रोबोट भी बेहतर हो गए हैं। शुरुआत में रोबोट्स को उबाऊ काम को, बिना थके हुए, लगातार करने के लिए डिजाइन किया गया। बाद में इन रोबोट्स ने खुद चीजें समझना और हालात के मुताबिक अपने बर्ताव में बदलाव करना भी सीख लिया। इस नये युग की शुरुआत तब हुई जब इन रोबोट्स में आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस का इस्तेमाल होने लगा। रोबोट बेहतर बनते गए और मनुष्य की भावनाओं और सामाजिक परिस्थितियों को भी बखूबी समझने लगे। रोबोट्स का विकास ऐसे दौर में पहुंच रहा है जहां वो खुद की भावनाओं को अनुभव कर सकें। लेकिन सवाल ये है कि यह सब क्या इंसान के लिए और रोबोट्स के लिए... जरूरी है भी या नहीं। लाखों वर्षों की विकास यात्रा के बाद भी, इंसान अपनी भावनाओं पर पूरी तरह से काबू नहीं रख पाया है... तो क्या ये मशीनें ऐसा कर सकेंगी ?

पात्र परिचय -

गार्गी - (रोबोट बनाने वाली कंपनी की युवा सीईओ)
गौतम - (गार्गी के पिता / बुजुर्ग)
आमना - (कंप्यूटर विशेषज्ञ / युवा)
निपुण - (इंसान की तरह दिखने वाला रोबोट / Quasi-Human Robot)
टीवी न्यूज एंकर - (महिला / पुरुष)
विवेक - (गार्गी का मंगेतर / युवा)
रवि, हरिनाथ और भूपति - (एल्गोरिदम राइटर / अधेड़)

---------- Opening Music / Scene One ----------

गार्गी: (खुद से बात करती हुई) ...हूं..., सभी चीजें तो एकदम ठीक लग रही हैं। किसी महामानव जैसी ताकत... उम्दा किस्म का न्यूरल सर्किट... जिसमें बगैर

निगरानी के, सूचनाओं को प्रोसेस करने की क्षमता हो। ...हां... इससे उसमें अनुभवों से सीखने और लगातार सुधरने की गुंजाईश बनी रहेगी। फिर भी, क्या ये सुरक्षित रहेगा कि ये रोबोट बेरोकटोक... खुद ही.. जानकारियां हासिल करता चला जाए ? सोच रही हूं... इस बारे में आमना से बात कर लूं...।

(फोन नंबर डायल करती है / दूसरे छोर पर फोन की घंटी बजती हुई / आमना फोन उठाती है।)

आमना: हेलो..।

गार्गी: हेलो आमना..। मैं बोल रही हूं... गार्गी।

आमना: नमस्ते मैम...। जी... बताइये मैम, कैसे याद किया ?

गार्गी: आमना, दरअसल मैंने उसी मामले पर बात करने के लिए फोन किया है... इंसानी खूबियों वाले रोबोट... मेरा मतलब है "क़ॉसी ह्यूमन रोबोट" (Quasi-Human Robot) के बारे में। अल्ट्रा-नेचुरल रोबोट्स की हमारी नई सीरीज़ का पहला प्रोटोटाइप।

आमना: जी मैम। मैंने उसके वर्चुअल ब्रेन यानी न्यूरल नेटवर्क की ड्राइंग्स आपको भेज दी हैं।

गार्गी: हां, मैंने उन्हें देखा। वो शानदार हैं... लेकिन..।

आमना: उनमें कुछ गड़बड़ है क्या मैम ? वैसे, वैज्ञानिकों का बोर्ड जो भी खूबियां चाहता था, उसमें मैंने वो सबकुछ शामिल किया है।

गार्गी: गड़बड़ तो कुछ नहीं है आमना। डिजाइन भी एकदम सही है। दरअसल वो कुछ ज्यादा ही सटीक बन पड़ा है।

आमना: ज्यादा ही सटीक डिजाइन ! सॉरी मैम.. मैं कुछ समझी नहीं।

गार्गी: हूं..., डिजाइन तो बिल्कुल वैसा ही है जैसा हम चाह रहे थे। ये रोबोट इंटेलीजेंट तो है ही, इसके न्यूरल चिप्स (Neural Chips) भी इतने काबिल हैं कि ये अपने अनुभवों से नई-नई चीजें सीखता चला जाएगा।

आमना: हां मैम। छोटे से छोटा नया अनुभव भी इस रोबोट को एक नई समझ देगा। जैसे-जैसे वक्त बीतेगा, ये रोबोट करीब-करीब... किसी इंसान की ही तरह बेहतर होता जाएगा।

गार्गी: हां, मीटिंग में हमने इसके डिजाइन पर बातचीत की थी। हमने ये तय किया कि इस रोबोट को ऐसे आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस से लैस किया जाए.. कि कुछ वक्त बाद इसमें पूरी इंसानी छवि उतर आए। मतलब ये... कि ये रोबोट किसी इंसान की सच्ची नकल लगने लगे।

आमना: हां मैम। वैज्ञानिकों ने इसका भी जिक्र किया था कि इस रोबोट को कभी अपग्रेड करने या फिर दोबारा प्रोग्रामिंग करने की भी जरूरत नहीं होगी। सोचिए मैम, ऐसा होने पर हम काफी वक्त, मेहनत और कच्चे माल की बचत कर पाएंगे।

गार्गी: ये सब मुझे मालूम है आमना। मुझे तो कुछ दूसरी ही चीज की फिक्र है।

आमना: बताइये मैम। मैं रोबोट के डिजाइन को और बेहतर बनाने की कोशिश करूंगी। अभी तो हम शुरूआती स्टेज में ही हैं और किसी भी तरह के बदलाव आसानी से हो जाएंगे।

गार्गी: मैं सोच रही थी....। जरा उस वक्त की कल्पना करो जब इंसानों की तरह दिखने वाला रोबोट डीप-लर्निंग की खूबियों की बदौलत काफी विकसित हो चुका होगा...। कहीं उसने हमें ही चुनौती देना शुरू कर दिया तो.... ? क्या होगा, अगर वो हर लिहाज से हमसे आगे निकल जाए और हमसे बेहतर काम करने लगे ?

आमना: अरे मैम। आप बेवजह ही परेशान हो रही हैं। रोबोट को बनाया भी तो इंसान ने ही है... और बनाने वाला तो हमेशा ही बड़ा होता है... ना कि उसकी बनाई हुई कोई रचना।

गार्गी: अगर बाहरी डिजाइन को छोड़ दे तो.... रोबोट को बनाया ही इसलिये गया था.. कि वो इंसानों से ज्यादा बेहतर काम कर सके... वो भी सटीक तरीके से। लेकिन, कहीं ऐसा तो नहीं कि इंसान ने खुद से बेहतर काम करने वाली मशीन बनाकर अपने लिये ही खतरा मोल ले लिया हो...। नहीं आमना... मेरे ख्याल से हमें सुरक्षा का कुछ-ना कुछ इंतजाम तो करना ही होगा। कहीं ऐसा ना हो कि ये क़ॉसी ह्यूमन रोबोट हमारे लिए ही खतरा बन जाए।

(पल भर की खामोशी)

गार्गी: तुम सुन रही हो ना आमना ? कुछ तो बोलो...। कुछ गलत तो नहीं कहा मैंने?

आमना: सॉरी मैम। मैं सोच रही थी कि मैं एक ऐसा मास्टर ओवर-राइड बटन बनाऊं जो ऑन-ऑफ हो सके। उस बटन को मैं रोबोट में न्यूरल सर्किट के अंदरूनी हिस्से में लगा लूंगी। जब भी आपको जरूरी लगे... आप एक इंफ्रारेड रिमोट की मदद से रोबोट को डिएक्टिवेट कर लेंगी।

गार्गी: हां.. ये ठीक रहेगा। बहुत-बहुत शुक्रिया आमना। और तुम्हें ये तो ध्यान ही रहेगा कि इसकी किसी को कानों-कान खबर ना लगे। इस रिमोट डिवाइस और डिएक्टिवेट करने वाले स्विच के बारे में किसी को पता नहीं चलना चाहिए... मीडिया को भी नहीं। और हां... स्विच को इतनी सफाई से फिट करना कि न्यूरल नेटवर्क के एक्टिव रहने के दौरान... खुद रोबोट को भी इसकी बिल्कुल भनक ना लगे।

आमना: जी, मैं समझ गई मैम।

----------Scene Transition Music ----------

(टेलीविजन चल रहा है / न्यूज़ चैनल पर एंकर और गार्गी की मुलाकात हो रही है)

टीवी एंकर: आज हम हाजिर हैं...इंसानों की तरह दिखने वाले रोबोट पर एक बड़ी खबर लेकर। एक भारतीय कंपनी ने ऐसा रोबोट तैयार किया है जिसे पूरी दुनिया में सबसे बेहतर बताया जा रहा है। हालांकि मजे की बात ये है कि कंपनी की प्रेस कान्फ्रेंस में ये रोबोट कहीं नजर नहीं आया। इसी मसले पर बात करने के लिए

हमारे साथ हैं कंपनी की सीईओ गार्गी। गार्गी जी, शो में आपका स्वागत है। सबसे पहले ये बताइये कि आपका वो बुद्धिमान रोबोट आखिर कहां लापता हो गया ?

गार्गी: (हंसते हुए) देखिये, वो रोबोट कहीं लापता नहीं हुआ था, बल्कि वो लगातार आपके इर्दगिर्द ही था। प्रेस कान्फ्रेंस में उसने आप सभी से बातचीत भी की, चाय की चुस्कियां भी लीं... और तो और... वो आप सभी को विदा करते वक्त भी हमारे साथ ही था।

टीवी एंकर: (हैरानी भरा स्वर) क्या कहा ? बात भी की और खाया-पिया भी ? एक मशीन भला कैसे खा सकती है ? ये तो नामुमकिन है।

गार्गी: देखिए वो एक क़ॉसी ह्यूमेनॉइड रोबोट (Quasi-humanoid robot) है। वो खाना-पीना सब करता है लेकिन इंसानों की तरह नहीं। आपकी हैरानी लाजिमी है, इसमें कोई आहारनाल तो होती नहीं, इसलिये इसका खाना-पीना अंदर ही स्टोर रहता है जिसे बाद में बाहर निकाल कर फेंक दिया जाता है। और हां, दावत शानदार हुई तो ये बातें भी मजेदार करता है। ***(हंसती है)***

टीवी एंकर: क़ॉसी ह्यूमेनॉइड रोबोट (Quasi-humanoid robot) ! मैं कुछ समझा नहीं।

गार्गी: क़ॉसी ह्यूमेनॉइड रोबोट यानी ऐसा रोबोट जो बिल्कुल इंसान होने का ही आभास दे... इंसानों जैसा ही लगे। रूप-रंग से भी और व्यवहार से भी। हमारा रोबोट आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस से लैस है। ये जो भी काम करता है, उस दौरान अपने अनुभवों से सीखता भी जाता है। चीजें देखकर भी ये नई-नई बातें सीखता रहता है।

टीवी एंकर: तो क्या... ये कभी कुछ गलतियां भी करता है ? बच्चा भी जब चलना सीखता है तो कई बार गिरता है। आपका ये रोबोट... क्या पहले दिन से ही हर चीज में पारंगत है ?

गार्गी: नहीं.. नहीं। एक दिन में भला की सब कुछ कैसे जानेगा ? हां, इतना जरूर है कि हमारा रोबोट ज्यादा तेजी से सीखता है। और अगर इससे कोई गलती हुई, तो फिर वो इसे कभी भी नहीं दोहराएगा।

टीवी एंकर: बहुत तेजी से सीख सकता है.... मतलब कितनी तेजी से ?

गार्गी: आज का ही उदाहरण लीजिए... प्रेस कॉन्फ्रेंस के बाद इसके न्यूरल नेटवर्क ने नए कनेक्शन बनाए हैं... जिन्हें साइनेप्स (Synapses) कहते हैं। साइनेप्स यानी ऐसे जोड़...जहां पर तंत्रिकाएं आपस में मिलती हैं। अगर सिर्फ दस - पंद्रह पत्रकारों से एक मुलाकात के बाद ही इस रोबोट में इस कदर बदलाव आ गया तो .. आप अंदाजा लगा सकते हैं कि अगर इसे एक महीने तक ऐसा ही माहौल मिला, तो कितना सुधार हो जाएगा।

टीवी एंकर: तो आपके इस रोबोट में और कोई खास बात है ? मेरा मतलब है, कोई अनूठी चीज ?

गार्गी: नहीं.. अभी तो ऐसा कुछ नहीं है। शुरुआत में हम इसे अलग-अलग हालात से रूबरू करवाएंगे। इससे इस रोबोट को नई-नई चीजें सीखने का मौका मिलेगा। फिर हम देखेंगे कि इसमें कोई तकनीकी खामी तो नहीं आ रही है। लगातार विकसित होते-होते... आगे को बनने वाले रोबोट्स प्रोटो ह्यूमन कहे जाएंगे... ना कि क़ॉसी-ह्यूमन। आप शायद समझ ही रहे होंगे कि... क़ॉसी ह्यूमन यानी इंसानी की तरह लगने वाले रोबोट... और प्रोटो-ह्यूमन रोबोट का मतलब हुआ, ऐसे रोबोट, जो हूबहू इंसान बनने से बस एक कदम ही पीछे हों।

टीवी एंकर: वाह... बातें तो काफी हैं.. लेकिन वक्त इजाजत नहीं दे रहा है। नए रोबोट्स की सीरीज़ के लिए आपकी कंपनी को हमारी शुभकामनाएं। आपका शुक्रिया। ***(एंकर की आवाज़ धीमी पड़ती जाती है।)***

----------Scene Transition Music ----------

(वर्कशॉप के अंदर का दृश्य / मशीनों के चलने का शोर)

गौतम: गार्गी, अभी बस दो साल पहले ही मैंने तुम्हें कंपनी की जिम्मेदारी सौंपी थी... और तुमने तो इस कंपनी की सूरत ही बदल डाली। कहां तो पहले तक हम लोग सिर्फ सीधे-सादे ऑटोमेटेड रोबोट ही तैयार कर पाते थे... और आज यही कंपनी क़ॉसी ह्यूमन रोबोट (Quasi-human robot) बना रही है। शाबाश गार्गी...। मैं बहुत खुश हूं तुमसे।

गार्गी: पापा, प्रॉडक्शन हॉल में काफी शोर हो रहा है। चलिए, मेरे ऑफिस में चलते हैं। वहीं बैठकर बात करते हैं। ***(कुछ ऊंचे स्वर में)*** निपुण, जरा कुछ चाय-पानी तो ले आना।

(वर्कशॉप का शोर धीरे-धीरे मंद पड़ता हुआ / पदचाप / गार्गी का ऑफिस)

गौतम: मैं तो इस किनारे वाली इस अपनी कुर्सी में ही बैठूंगा... ना कोई काम होगा और ना ही कोई जिम्मेदारी। तुम टेबल से उस पार वाली कुर्सी में बैठकर अपना काम निपटाओ। ***(हंसी के साथ)*** बाहर तो काफी गर्मी थी, वो लड़का कुछ ठंडा ही लाए तो बेहतर रहेगा।

(निपुण दरवाजे पर दस्तक देता है)

गार्गी: आओ निपुण आओ...। पापा, ये निपुण है। इन्होंने अभी हाल ही में हमारी कंपनी ज्वाइन की है। अभी अप्रेंटिस पर हैं। निपुण, ये मेरे पापा हैं।

निपुण: नमस्ते सर। आपके बारे में सुना तो बहुत था, लेकिन मुलाकात का मौका आज मिला। मैम, मैं आपके लिए कोल्ड कॉफी लेकर आया हूं। इसके कैफीन से आपको एक नई ऊर्जा मिलेगी... ताकि आप अपने पिताजी को फैक्ट्री की सभी नई-नई चीजें दिखा सकें। सर, आज तो वास्तव में बहुत ज्यादा गर्मी है... मैं पहले से देख रहा हूं, आप लगातार अपने माथे का पसीना पोंछ रहे हैं। अगर जरूरत पड़े.. तो इस प्याले में बर्फ के कुछ क्यूब्स भी लेकर आया हूं।

गौतम: वाह, शानदार..। मेरा मन भी कुछ ठंडा पीने का ही कर रहा था। थैंक्यू निपुण।

निपुण: मैम, मैंने ऑगमेनटेशन सॉफ्टवेयर (Augmentation Software) को अच्छी तरह से जांच-परख लिया है.. और रिपोर्ट्स भी तैयार हैं। जब आपको वक्त मिले, मुझे बुला लीजिएगा। मुझे इसमें कुछ गड़बड़ियां भी मिली हैं.. और हमें रोबोट के मॉडल को अंतिम रूप देने से पहले उन्हें सुधारना होगा। वर्ना, सर्किट के ओवरहीटिंग का खतरा बना रहेगा। खैर, ये बातें तो बाद में भी हो जाएंगी।

गार्गी: वाह निपुण, बहुत बढ़िया। चलो ठीक है, शाम को सात बजे नए कांफ्रेंस रूम में मीटिंग है, वहीं मुलाकात होगी। आमना से कहना कि वो आज शाम कुछ देर और रुक जाए। टीम के दूसरे साथियों को भी बता देना।

निपुण: जी, ज़रूर। मैं आमना को घर छोड़ने के लिए कैब भी बुक कर दूंगा। आप कोल्ड कॉफी लीजिए, मैं अभी चलता हूं।

(दरवाजा खुलने और बंद होने की आवाज़ / निपुण ऑफिस से बाहर निकल जाता है।)

गार्गी: पापा, मुझे यकीन नहीं होता कि निपुण ने रोबोटिक सर्किट में उस गड़बड़ी को खोज निकाला, जो ओवर-हीटिंग की वजह बनी हुई थी।

गौतम: ओवर-हीटिंग ?

गार्गी: पापा, ये तो आपको पता ही है कि हम लोग अपने पुराने ऑटोमेटेड रोबोट्स को अपग्रेड कर रहे हैं। लेकिन पता नहीं... शायद लोड बढ़ने की वजह से उनके सर्किट में ओवरहीटिंग की शिकायत आ रही थी। एक-दो रोबोट के सर्किट ने तो गर्मी की वजह से आग भी पकड़ ली थी। मैंने कल ही निपुण को पुराने रोबोट्स का सॉफ्टवेयर दिया और उसने गड़बड़ी को आज ही पहचान लिया। है ना गजब की बात !

गौतम: निपुण का आई.क्यू. तो जबरदस्त है। वर्ना वो इतनी आसानी से सर्किट की गड़बड़ी को खोज भी नहीं पाता। जब पहली बार तुमने वो एल्गोरिदम्स बनाये तो मुझे भी दिखाए थे, मैं खुद को इतना जानकार मानता हूं.. लेकिन फिर भी मैं कोई गड़बड़ी नहीं खोज पाया।

गार्गी: हां, जब हमने निपुण का आई.क्यू. टेस्ट किया था तो वो एक सौ साठ (160) निकला। लेकिन इससे भी बड़ी बात है कि वो अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाता है। आपने देखा नहीं ? मेरे कुछ कहे बगैर उसने आमना को घर पहुंचाने का इंतजाम भी खुद ही कर लिया।

गौतम: सही बात है। वो बुद्धिमान तो है ही, भावनाओं की भी कद्र करता है। ऊंचे आई.क्यू. के साथ साथ ऊंचा ई.क्यू. (Emotional Quotient) भी। ऐसा जबरदस्त तालमेल आसानी से नहीं मिलता। इस ट्रेनी को कहीं और मत जाने देना। उसे अपनी कंपनी में ही पक्का कर लेना।

---------- Scene Transition Music ----------

(गार्गी का फोन बज रहा है, लेकिन वो फोन नहीं उठा रही है / घंटी लगातार बज रही है।)

गार्गी: निपुण, तुम चलो, मैं आती हूं। मैं जरा फोन पर बात कर लूं। बहुत जरूरी और पर्सनल कॉल है। मैं जल्दी ही तुमसे और आमना से मिलूंगी। ***(फोन रिसीव करती है और जवाब देती है)*** हेलो विवेक... तुम पहुंच गए क्या ? कैसी रही तुम्हारी हवाई यात्रा ?

विवेक: **(फोन पर)** ठीक रही, लेकिन फ्लाइट पांच घंटे लेट हो गई। मैं बहुत थक गया हूं, अभी सीधे घर जा रहा हूं। तुमसे कल मुलाकात होगी। सॉरी गार्गी, मुझे पिछला प्लान बदलना पड़ा है।

गार्गी: कोई बात नहीं विवेक। वैसे मैं भी अभी एक मीटिंग में जा रही हूं जो शायद देर तक चलेगी। अब कल ही मिलेंगे तो सही रहेगा। तुम्हारी थकान भी मिट जाएगी और मेरा काम भी हो जाएगा। ***(हंसी के साथ)***... बाय.. विवेक.. कल मिलते हैं।

(दरवाजा बंद है / निपुण बातचीत सुनता रहता है)

गार्गी: (खुद से) अरे, निपुण तो अभी भी यहीं टहल रहा है। चलो कोई बात नहीं, ऐसी कोई खास बात भी तो नहीं हुई फोन पर। लेकिन मुझे इस हरकत पर उसकी प्राइवेट फाइल में नोट तो लगाना ही होगा। ***(तेज़ पदचाप सुनाई देती है)*** देर भी हो रही है। कान्फ्रेंस हॉल में सभी लोग मेरा इंतजार कर रहे होंगे।

---------- Scene Transition Music ----------

(कान्फ्रेंस हॉल / मीटिंग चल रही है)

गार्गी: साथियो, जैसा कि निपुण ने एकदम साफ ही कर दिया कि एल्गोरिदम में कुछ गड़बड़ियां थीं। कुछ ऐसी गल्तियां जो बाहरी तौर पर नज़र भी नहीं आ रहीं थीं।

और इन्हीं खामियों की वजह से मशीनों का अंदरूनी सर्किट लगातार गर्म हो रहा था। हमारे सॉफ्टवेयर इंजीनियरों को इसे फिर से देखने की जरूरत है।

रवि: ***(गुस्से में)*** मैम, आप इस तरह एल्गोरिदम राइटर्स को दोष नहीं दे सकतीं। हमारी कंपनी बिस्मथ, इंडियम और टिन (bismuth, indium and tin) जैसी महंगी धातुओं की बजाय सस्ते एल्यूमीनियम का इस्तेमाल कर रही है... और इसी वजह से रोबोट तेजी से गरम हो रहे हैं। यही है ओवरहीटिंग की असल वजह।

हरिनाथ: ***(गुस्से में / अशिष्ट अंदाज में)*** बिल्कुल... । एल्गोरिदम एकदम सही हैं। इसमें हम सॉफ्टवेयर इंजीनियर्स की कोई गलती नहीं है। इसमें तो उन लोगों की गलती है जिन्होंने इतना घटिया मेटीरियल इस्तेमाल करने के लिए आपको राजी कर लिया। वही लोग आज हमें जिम्मेदार ठहरा रहे हैं। और गार्गी.... आप भी हमेशा उनका ही पक्ष लेती हो, क्योंकि वो लोग आपके पिताजी के वक्त से इस कंपनी में काम कर रहे हैं।

रवि: वैसे भी..आप कोई सॉफ्टवेयर इंजीनियर तो हो नहीं... आप भला ये सब कहां समझोगी।

आमना: सोच-समझकर बोलो आप लोग...। मत भूलो कि ये एक ऑफिशियल मीटिंग है।

निपुण: (खुद से) मैं ये क्या महसूस कर रहा हूं..। इन सॉफ्टवेयर इंजीनियर्स का ये बर्ताव, गार्गी मैम पर उनका चिल्लाना... ये सब सुनकर कुछ अजीब सा एहसास हो रहा है। लेकिन अभी इस पर ध्यान देने का वक्त नहीं है... अभी मुझे मैम का बचाव करना होगा। ***(तीनों सॉफ्टवेयर इंजीनियर्स से मुखातिब होते हुए)*** प्लीज़... आप लोग शांत हो जाइए। आप इस तरीके से बातें नहीं कर सकते। एल्गोरिदम में जिन प्वाइंट्स का मैंने जिक्र किया है, मैं उस पर आपकी राय चाहता हूं। आप ये बताइये कि आपको वहां कोई गलतियां दिखीं या नहीं ?

रवि: ***(गुस्से में बड़बड़ाते हुए)*** तुम्हारी इतनी हिम्मत कि एक ट्रेनी होने के बावजूद तुम हमारी गलतियां ढूंढोगे !

हरिनाथ: ***(गुस्से में)*** मैं तुम्हारी पिता की उम्र का हूं... समझे !

भूपति: ***(गुस्से में / चिल्लाते हुए)*** हम तीनों के अनुभव को अगर मिला दें ना....तो अस्सी साल से ज्यादा का तजुर्बा है हमारा...। और तुम्हें अभी जुम्मा-जुम्मा आठ महीने भी नहीं हुए हैं। गार्गी को तो मैनेजमैंट संभाले हुए अभी दो साल ही हुए हैं।

निपुण: लेकिन गलती तो गलती है... चाहे वो कितने ही अनुभवी शख्स से हुई हो। और आपने भी गलती की है, बस, आप इसे स्वीकार कर लें। इसमें इतना भड़कने और गुस्सा होने की क्या जरूरत है। **(कुछ गुस्से में)** आप लोग माफी मांगते हैं या फिर मैं.....।

आमना: **(खुद से)** मैं तो निपुण को आज पहली बार गुस्से में देख रही हूं। रोबोट्स को तो गुस्सा आता ही नहीं। गुस्सा आना तो एक एहसास है, एक भावना है। कहीं ऐसा तो नहीं कि आखिरकार निपुण ने अपनी भावनाओं को जाहिर करना भी सीख लिया ? क्या वो अपनी भावनाओं को काबू में रख सकेगा ?

गार्गी: **(अपने गुस्से को दबाते हुए / ठंडे स्वर में)** शांत हो जाओ निपुण... । और आप तीनों भी जरा गौर फरमाएं। और कोई बता दे तो फिर गलतियां आसानी से नज़र आने लगती हैं। रवि, हरिनाथ और भूपति... आप तीनों भी अपनी गलती मान लीजिए...। इसमें हिचक कैसी ?

आमना: अगर आप तीनों अपनी गलती नहीं मानेंगे तो फिर मैम को.. मजबूरन.. बाहर से एक्सपर्ट बुलाने पड़ेंगे। और तब यही माना जाएगा कि आप लोगों ने ये गलती जानबूझकर ही की है। फिर इसे भूल नहीं, बल्कि एक अपराध समझा जाएगा।

निपुण: और एक कर्मचारी के तौर पर आप लोगों का अपनी सीईओ से इस तरह बात करना बिल्कुल भी सही नहीं है। ये ना सिर्फ बदतमीजी है बल्कि ऑफिस के नियम-कायदे के खिलाफ भी है।

रवि: लेकिन गार्गी... निपुण तो अभी महज एक ट्रेनी है...

(रवि की बात को बीच में काटते हुए)

गार्गी: हां, बेशक वो एक ट्रेनी है लेकिन बेवकूफ नहीं है। मैं सॉफ्टवेयर विशेषज्ञ नहीं हूं, लेकिन फिर भी वो सबकुछ समझ रही हूं, जो निपुण कह रहा है।

रवि / हरिनाथ / भूपति: ***(संकोच के साथ / बड़बड़ाते हुए)*** ठीक है... निपुण की बात सही हो सकती है... लेकिन इतनी कम समझ के बावजूद वो गड़बड़ी का पता कैसे कर सकता है ?

गार्गी: ये क्या बात हुई, कि उसने गड़बड़ी का पता कैसे लगाया ? जाहिर सी बात है, कि वो अपने इर्दगिर्द की हर हलचल पर पैनी नज़र रखता है। उसे आप लोगों के सेक्शन में काम करते हुए तीन महीने हो गए हैं... और वो बेहद पढ़ाकू भी है। खैर छोड़ो... अब गड़बड़ी का पता चल गया है और उसे दुरुस्त करना पहली जरूरत है।

आमना: अगर मुझे नया एल्गोरिदम मिल जाए तो.. मैं उसमें जरूरी बदलाव कर दूंगी... और अगर सबकुछ सही रहा तो इससे हमारे डिलीवरी शेड्यूल पर भी कोई असर नहीं पड़ेगा। क्लाइंट्स को इसका कुछ भी पता नहीं चलेगा।

निपुण: कल सुबह तक आपको नया एल्गोरिदम मिल जाएगा। ये मेरा वादा है।

भूपति: **(झिझकते हुए)** कल सुबह तक तो इसे तैयार करना संभव ही नहीं है। इतनी जल्दी तो हमारे बस की भी बात नहीं। अगर घर ना जाएं और पूरी रात भर काम करते रहें, तो भी सुबह तक नया एल्गोरिदम तैयार नहीं हो पाएगा।

निपुण: वादा मैंने किया है, तो मैं ही पूरा भी करूंगा। मैं जो भी जिम्मेदारी लेता तो फिर उसे पूरी तरह निभाता हूं। आप लोग बेफिक्र रहिये... डिलीवरी वक्त पर ही होगी।

आमना: **(खुद से)** ये पहला मौका है जब निपुण में एहसानमंद होने का भाव दिख रहा है। यूं तो... रोबोट सिर्फ प्रोग्राम के मुताबिक काम करते हैं या फिर हालात के हिसाब से प्रतिक्रिया देते हैं। क़ॉसी-ह्यूमेनॉइड रोबोट भावनाओं को महसूस कर सकते हैं... काश, निपुण इन भावनाओं को काबू में रख सके।

हरिनाथ / रवि / भूपति: ***(खुद बुदबुदाते हुए)*** इस नये लड़के को खुद पर कुछ ज्यादा ही भरोसा है। जितना तेज ऊपर जा रहा है, उसी तेजी से ज़मीन पर भी गिरेगा.... तब पता चलेगी हकीकत।

गार्गी: मुझे निपुण पर भरोसा है। अगर उसने काम होने का यकीन दिलाया है तो वो पूरा भी जरूर करेगा। आमना, तुम सुबह आकर सबसे पहले निपुण से ही मिलना। चलो ठीक है... आप सब लोग भी अपने घर जाइये... मैं भी चलती हूं... गुडनाइट..।

(गार्गी कान्फ्रेंस रूम से बाहर निकलती है /
ऊंची एड़ी वाली सेंडल की आवाज़ गूंजती है / धीरे-धीरे मंद पड़ती हुई)

भूपति / हरिनाथ: ठीक है... हम लोग भी निकलते हैं। काफी देर हो गई है।

रवि: **(व्यंग्यात्मक अंदाज में)** निपुण, मेरे ख्याल से तुम तो शायद रात भर यहीं रुकोगे ? हम लोग तो घर को निकल रहे हैं। बाय....।

(तीनों कान्फ्रेंस रूम से बाहर निकलते हैं / पदचाप सुनाई देती है)

आमना: निपुण, इन तीनों इंजीनियरों के बर्ताव का बुरा मत मानना। तुमने देख ही लिया, तीनों को कितनी घबराहट हो रही है। उनको लग रहा था कि गार्गी मैम की नजरों में तुम उनकी जगह ले लोगे। इसीलिये, वो तुम्हें चुनौती दे रहे हैं।

निपुण: समझ गया। ये सब बताने के लिए शुक्रिया।

आमना: लेकिन गार्गी मैम को तुम पर पूरा भरोसा है। तभी तो उन्होंने भी तुम्हारा ही पक्ष लिया और तुम्हारा साथ दिया।

निपुण: अच्छा ! ये सबकुछ समझाने के लिए शुक्रिया। दरअसल, कभी-कभी इंसानी भावनाओं को समझने में, मैं गच्चा खा जाता हूं।

आमना: धीरे बोलो निपुण.... गार्गी मैम और मेरे सिवा कोई भी ये नहीं जानता कि तुम एक रोबोट हो। जब भी तुम ज़ोर से बोलो तो जरा ध्यान रखा करो। हां, ये भी

समझ लो कि इंसानी भावनाएं सिर्फ तर्कों पर आधारित नहीं होती, इसलिये तुम्हें कई बार भ्रम हो सकता है। ये तो तुम्हें मालूम ही होगा ?

निपुण: नहीं.. नहीं.. मालूम तो नहीं था... लेकिन अब सीख रहा हूं। कान्फ्रेंस रूम में मुझे एक अजीब सा एहसास हुआ। पहले तो मुझे लगा कि शायद कोई करंट है.. लेकिन अब लग रहा है कि वो तो गुस्से का भाव था। जब रवि ने मेरा मजाक उड़ाया तब मुझे गुस्से का एहसास हुआ। ऐसा पहले कभी भी नहीं हुआ था।

आमना: **(हंसते हुए)** ओह... कितनी अजीब बात है। तुम्हें पहला एहसास हुआ.. और वो भी गुस्से का। मुझे तो उम्मीद थी कि तुम पहली भावना के तौर पर प्यार का एहसास करोगे।

निपुण: प्यार ! अब ये कौन सी नई बला है ? मुझे भला इसका अंदाजा कैसे लगेगा ?

आमना: प्यार तो एक ऐसा एहसास है, जो ना तो बयां किया जा सकता है, और ना ही इसके कोई विशेष लक्षण ही हैं। बस इसका अंदाजा तुम्हें तभी होगा, जब तुम्हें किसी से प्यार हो जाए। वैसे... काफी देर हो गई है... अब मुझे भी निकलना चाहिए। कैब के आने का वक्त हो गया है। बाय..।

(पदचाप / धीरे-धीरे मंद पड़ती हुई)

निपुण: (खुद से) गुस्सा ! इस भावना को तो मैंने पहचान भी लिया और महसूस भी कर लिया है। लेकिन प्यार का क्या ? इसकी पहचान भला कैसे होगी ? मुझे खुद के जज्बातों पर निगाह रखनी होगी। सच में... इंसानी भावनाओं को समझना कोई खेल नहीं.. बहुत ही उलझा हुआ मसला है ये। क्या होगा अगर मैं ओवर-हीट होकर भस्म हो जाऊं ? बड़ा अजीब सा लग रहा है ये सोचकर? ! डर ? घबराहट ? बेचैनी ? मुझे अपने अंदरूनी संकेतों की पड़ताल करनी होगी...।

----------Scene Transition Music ----------

निपुण: गुड मॉर्निंग मैम।

गार्गी: गुड मार्निंग निपुण। आज तो काफी खुश नज़र आ रहे हो।

निपुण: आपको देखकर तो मैं हमेशा ही खुश रहता हूं मैम। वैसे खुशखबरी ये है कि अपने वादे के मुताबिक मैंने एल्गोरिदम तैयार कर लिए हैं।

रवि / भूपति / हरिनाथ: ***(व्यंग्य भरे अंदाज में)*** निपुण, गार्गी मैम को ऑफिस के अंदर तो बैठने दो। इतनी भी क्या जल्दी है ? ... हमें तो मालूम ही है, कुछ देर बाद तो तुम माफी मांगोगे। तुम्हारी समझ में आ जाना चाहिए कि हवाई-वादे करने से कुछ नहीं होता। हम लोग गौतम सर के ज़माने से यहां काम कर रहे हैं और हम कभी भी....।

गार्गी: **(बीच में टोकते हुए / उनकी बात को ही आगे बढ़ाते हुए)** ... तुम जैसे काबिल नहीं बन पाए... ना ही हमने तुम्हारी तरह अपनी कोई साख बनाई। क्यों... है ना ? रवि, हरिनाथ और भूपति... ! आप तीनों को निपुण से माफी मांगनी चाहिए। उसने अपना वादा बखूबी निभाया है... और आमना काम को आगे बढ़ा रही है।

हरिनाथ / रवि / भूपति: क्या... क्यों... कैसे हुआ ये सब... ?

(गार्गी के ऑफिस का दरवाजा बंद होने की आवाज़)

निपुण: रवि जी, हरिनाथ जी, भूपति जी, आपको तो गार्गी मैम का शुक्रगुजार होना चाहिए कि उन्होंने बेहद कम समय में कंपनी के लिए इतना कुछ किया है। मैं तो उनके लिए और अपनी कंपनी के लिए कुछ भी कर गुजरने को तैयार हूं। आप तीनों का क्या ख्याल है ?

(Music Effect)

निपुण: मैम, जापान की एक कंपनी के लोग आपसे मिलना चाहते हैं। क्वासी-ह्यूमन रोबोट के हमारे प्रोग्राम में उनकी बहुत दिलचस्पी है।

गार्गी: ठीक है। उनसे बात करके मीटिंग का कोई वक्त तय कर लो।

निपुण: आज ही ?

गार्गी: नहीं.. नहीं.. आज नहीं। आज तो मुझे विवेक से मिलने जाना है। कल लंच के बाद मीटिंग फिक्स कर लो। अरे.. हां... जल्दी से "जायका रेस्टोरेंट" में कल लंच के लिए एक टेबल भी बुक कर दो प्लीज़।

निपुण: मतलब... आप जापानी टीम के साथ लंच करेंगीं ? वाह, क्या शानदार आइडिया है।

गार्गी: ***(हंसते हुए)*** अरे नहीं...। वहां तो सिर्फ मैं और विवेक लंच करेंगे। शायद कल हम अपनी शादी की तारीख तय कर लें।

निपुण: ***(अचानक आवाज धीमी और उदास हो जाती है)*** शादी की तारीख ?

गार्गी: ***(खुशी से चहकते हुए)*** हां...।

निपुण: (मायूसी भरा स्वर) ठीक है। मैं टेबल बुक कर लूंगा। लेकिन किसी एक शख्स को लंच पर ले जाने से बेहतर तो ये रहता.. कि जापान से आए लोगों को दावत दी जाए।

(दरवाजा बंद होने की आवाज़)

गार्गी: ***(खुद से)*** जब वो तीनों सॉफ्टवेयर इंजीनियर मुझे चुनौती दे रहे थे, तब निपुण पूरी ताकत से मेरे बचाव में सामने आ गया था। और जबसे उसने विवेक के बारे में सुना, वो कुछ मायूस नजर आने लगा है। एक दिन वो चुपचाप छिपकर मेरी फोन की बातचीत को भी सुन रहा था... कहीं ये सब जिज्ञासा की किसी नई भावना की शुरूआत तो नहीं ? नहीं... नहीं..., ले लक्षण तो बिल्कुल भी अच्छे नहीं हैं। मुझे फिर से उसके खिलाफ कुछ नोट्स लिखने होंगे।

(दरवाजे पर दस्तक सुनाई देती है)

विवेक: सीईओ साहिबा... क्या मैं अंदर आ सकता हूं ?

गार्गी: **(खुशी भरा स्वर)** अरे वाह... विवेक ! गजब....। आओ.. आओ... अंदर आओ। मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रही थी। निपुण ने रेस्टोरेंट में टेबल भी रिज़र्व करा ली है। **(ऊंचे स्वर में पुकारते हुए)** निपुण... कार तैयार है क्या ?

निपुण: जी मैम...। अगर आपकी इजाजत हो तो कार मैं ड्राइव कर लूं। मैं ड्राइविंग भी अच्छी कर लेता हूं।

विवेक: नहीं-नहीं...। मेरी कार से चलेंगे... मैं खुद ही ड्राइव कर लूंगा।

(कार का इंजन स्टार्ट होने की आवाज़ /धीरे-धीरे मंद पड़ती कार की आवाज़)

निपुण: **(खुद से)** मुझे कुछ अजीब सा लग रहा है। ऐसा एहसास तो पहले कभी नहीं हुआ। जरा देखूं तो.. हाल ही में इंस्टॉल किया गया इमोशनल ब्लू प्रिंट क्या बताता है.... अरे ! ये तो कुछ-कुछ ईर्ष्या का भाव लग रहा है।

आमना: निपुण, तुम गेट पर खड़े-खड़े क्या कर रहे हो ? और रोड में क्या देख रहे हो तुम ?

निपुण: ***(कुछ भारी स्वर में / रुक-रुककर / मानो आत्मसाक्षात्कार हो गया हो)*** अब मैं गुस्से, डर, असुरक्षा और ईर्ष्या की भावना का एहसास कर सकता हूं। आजकल मुझे इन सभी इंसानी भावनाओं का एहसास हो रहा है। ये बिल्कुल नए बदलाव हैं.... और अब मैं शायद कई राज भी जान लूंगा।

आमना: ***(मजाक में छेड़ते हुए)*** निपुण, ये सबकुछ तो उस अनूठे जज़्बात से जुड़े साइड-इफेक्ट हैं ... जिसे हम लोग प्यार कहते हैं। क्या तुम्हें इसका एहसास हुआ ? मेरा मतलब है...कहीं तुम्हें प्यार तो नहीं हो गया ?

निपुण: आमना, जब भी मैं गार्गी मैम के बारे में सोचता हूं तो मुझे नकारात्मक सोच के साथ-साथ जिम्मेदारी और देखभाल जैसी भावनाओं का भी आभास होता है। क्या इन सब जज़्बातों के मिलेजुले रूप को प्यार कहते हैं ?

आमना: ***(हंसते हुए)*** सोचो जरा..

निपुण: मुझे तो कुछ भी समझ नहीं आ रहा है। इतना भ्रम तो मुझे पहले कभी नहीं हुआ। रोबोट तो कभी भी भ्रमित नहीं होते। यही हमारे वजूद की पहली जरूरत है। हम तो बस... तर्क करते हैं ...या फिर मिले हुए डेटा में से सटीक नतीजे निकालते हैं।

आमना: ***(चिंतित स्वर में)*** भ्रम... ये तो एक ऐसी इंसानी भावना है जिसका एहसास किसी रोबोट को कभी भी नहीं होना चाहिए। अगर तुम्हें लगातार कंफ्यूज़न यानी भ्रम होता रहा तो एक क़ॉसी ह्यूमेनॉइड रोबोट के तौर पर तुम्हारे अंदर दो किस्म की भावनाएं टकराने लगेंगी। तर्क कुछ और कहेगा... और भ्रम तुम्हें फिर से भटका देगा। यही स्थिति बनी रही तो फिर तुम्हारा अंदरूनी सर्किट बंद भी हो सकता है... ये भी डर है कि कहीं तुम खुद को तबाह ना कर लो...। निपुण, मैं इसीलिए कहती हूं कि अपनी भावनाओं को काबू में रखना सीखो, सतर्क रहो।

निपुण: आमना, अब मैं क्या करूं ?

आमना: तर्कों की मदद से ही तुम अपने इस असमंजस को दूर कर सकते हो। तुमने आगे का एक साफ रास्ता चुनना होगा। मुझे अब यकीन हो चला है कि....क़ॉसी-ह्यूमेनॉइड रोबोट, इस तरह के अलग-अलग जज़्बातों को समझने में धोखा खा जाते हैं। ***(कुछ ऊंची आवाज में)*** अरे निपुण... निपुण... कहां जा रहे हो तुम ?

निपुण: विवेक मेरा दुश्मन है। वो गार्गी मैम को मुझसे दूर कर देगा... मुझे उसे रोकना ही होगा। मैं गार्गी मैम को वापस लाकर रहूंगा।

(कार स्टार्ट होने की आवाज़ / तेज रफ्तार से कार चलने की आवाज़)

----------Scene Transition Music ----------

(रेस्त्रां का दृश्य / चम्मच-प्लेट की धीमी आवाज़ें / गार्गी और विवेक मौजूद हैं)

गार्गी: अच्छा हुआ जो हम जल्दी आ गए। यहां अभी ज्यादा भीड़भाड़ भी नहीं है।

विवेक: गार्गी, मुझे तुमसे कुछ जरूरी बात कहनी है... दरअसल जो तुम्हारी कंपनी का वो नया ट्रेनी है ना...।

गार्गी: कौन... निपुण ?

विवेक: हां, निपुण... मुझे उसका बर्ताव काफी कुछ अजीब सा लगा। जब भी वो बोलता है तो लगता है जैसे मुझे चुनौती दे रहा हो। कहीं वो तुमसे प्यार तो नहीं करता ?

गार्गी: ***(ठहाका लगाकर हंसती है)*** कैसी बातें कर रहे हो विवेक...। ये फालतू के विचार अपने दिमाग से निकाल दो। निपुण तो... ***(मोबाइल फोन की घंटी बजती है)*** अरे... आमना मेरे प्राइवेट नंबर पर कॉल क्यों कर रही है ? उसे तो मालूम ही है कि अभी मैं तुम्हारे साथ लंच के लिए गई हुई हूं।

विवेक: फोन को स्पीकर में रखकर बात कर लो। क्या पता, बहुत जरूरी बात हो। कोई इमरजेंसी भी हो सकती है।

(गार्गी फोन उठाती है / फोन स्पीकर पर आती आवाज़)

आमना: ***(डर के साथ / हांफते हुए)*** मैम... निपुण ऑफिस की कार लेकर यहां से निकल गया है। शायद हो आपके पास... रेस्टोरेंट में ही आ रहा है। निपुण कह रहा था कि अब उसे वो हर एहसास होने लगा है जो किसी भी इंसान को होता है। वो आपके बारे में भी अपने जज़्बातों का इजहार कर रहा था। फिर वो तेजी से यहां से निकल गया। आप अपना ख्याल रखिएगा मैम...। हम लोग भी जल्दी ही वहां पहुंचते हैं।

गार्गी: हेलो... हेलो... क्या कहा... ? निपुण यहां आ रहा है ?

विवेक: देखो गार्गी... मैंने कही कहा था ना..।

गार्गी: विवेक, अभी मजाक का वक्त नहीं है। उठो ... जल्दी से यहां से निकलो और वॉशरूम में छिप जाओ...। वहां से तब तक बाहर मत निकलना, जब तक मैं तुम्हें बुलाऊं नहीं... जल्दी करो विवेक।

विवेक: क्या कहा ? किसी डरपोक की तरह वॉशरूम में छिप जाऊं ?

गार्गी: **(चिल्लाते हुए)** जाओ विवेक... जल्दी से जाओ...।

(संगीत / झटके के साथ निपुण पहुंच जाता है)

निपुण: कहां है वो.. ? कहां है विवेक ?

गार्गी: ***(मधुर स्वर में)*** विवेक ? वो तो चला गया। मैं तो यहां अकेली ही हूं।

निपुण: हां, मुझे भी नहीं दिख रहा है इधर।

गार्गी: ***(खुद से)*** अभी वो रेंज में नहीं है... जब वो और करीब आएगा, तभी काम बनेगा।

निपुण: मुझे आपको ये बताना है कि अब मैं हर इंसानी जज़्बात का एहसास कर सकता हूं।

गार्गी: वाह.. ये तो शानदार है। अब तुम इंसान बनने के एक कदम और करीब आ गए हो.. यानी जल्द ही तुम प्रोटो-ह्यूमन रोबोट बन जाओगे। जब तुम इंसानों की सभी भावनाओं को महसूस करने लगोगे और अपने जज़्बातों पर काबू भी रख सकोगे. तब तुममें और और असल इंसान में कोई फर्क नहीं होगा।

निपुण: मैं गुस्सा, डर, बदला, फिक्र, ईर्ष्या और अपनेपन की भावना को महसूस कर सकता हूं। इसके साथ ही मुझे जिम्मेदारी, गर्मजोशी और देखभाल जैसे एहसास भी होने लगे हैं। आमना कहती है कि इस सबका नाम ही प्यार है।

गार्गी: थौड़ा और करीब आओ निपुण.. और मुझे सबकुछ खुलकर बताओ। अगर मुझे तुम्हारी बात समझ में आ गई तो मैं तुम्हें इसी वक्त.. प्रोटो-ह्यूमन स्टेटस में प्रमोट कर दूंगी।

निपुण: इसी वक्त... ? यहीं पर... ? मुझे लगता है... मुझे तुमसे प्यार हो गया है।

गार्गी: **(खुद से / धीमे स्वर में)** हां, निपुण.. लेकिन ये मत भूलो कि मैं इस इंफ्रारेड रिमोट को साथ लिए बगैर कहीं भी नहीं जाती। जब से आमना ने तुम्हें बनाया है, मैं तभी से इस वक्त का इंतजार कर रही थी। **(कुछ ऊंची आवाज़ में)** और करीब आओ निपुण.. और करीब।

(निपुण और करीब आता है / गार्गी रिमोट का इस्तेमाल करके निपुण को डिएक्टिवेट कर देती है / निपुण धम्म से फर्श पर गिर पड़ता है / अफरातफरी मच जाती है / मेज से कप-प्लेटें गिरने की आवाज़ / पुलिस-पुलिस का शोर सुनाई देता है)

निपुण: ***(भारी आवाज़ / जैसे कोई जख्मी इंसान बोल रहा हो)*** इंसान ने मेरे साथ छल किया है..। रोबोट कभी झूठ नहीं बोलते.. क़ॉसी ह्यूमेनॉइड रोबोट भी नहीं...। मैंने तो बस, इन लोगों को अपनी भावनाओं के बारे में बताया... इस अजीब से जज़्बात के बारे में बताया, जिसे ये लोग प्यार कहते हैं। एक ऐसा एहसास जो कई सारी भावनाओं का मिलाजुला नतीजा लगता है। लेकिन तुमने मुझे क्या दिया.. सिर्फ धोखा। ***(धीरे-धीरे आवाज मंद पड़ती जाती है)***

गार्गी: ***(उदास स्वर में)*** इंसान होना कोई आसान बात नहीं है निपुण...। हम इंसान हैं.. हम अपने प्रियजनों को खतरों से बचाने के लिए झूठ भी बोल सकते हैं। जरूरत पड़ी, तो हम अपनी बनाई हुई हर चीज को, बहुत ही आसानी से खत्म कर देते हैं। चाहे वो हमारे लिए कितनी ही प्यारी क्यों ना हो। उसके खत्म होने के बाद भले ही हम कुछ दुख मना लें। (कुछ ऊंचे स्वर में) विवेक, अब तुम बाहर निकल आओ.. अब कोई खतरा नहीं है।

(पुलिस के साइरन की आवाज़ / करीब आती हुई)

----------Scene Transition Music ----------

(टेलीविज़न स्टूडियो / गार्गी भी स्टूडियो में ही मौजूद हैं)

टीवी एंकर: आज शहर के एक रेस्टोरेंट में... मशहूर कंपनी की सीईओ गार्गी ने दुनिया के सबसे विकसित क़ॉसी ह्यूमेनाइड रोबोट को डिएक्टिवेट कर दिया... या यूं कहें कि नष्ट कर दिया। ये अपने किस्म का इकलौता प्रोटोटाइप था। इतने विकसित रोबोट के खत्म होने को काफी दुखद घटना माना जा रहा है। इसके साथ ही हमारे देश का, क़ॉसी ह्यूमेनाइड रोबोट के क्षेत्र में मार्केट लीडर बनने का सपना भी बिखर गया है। अभी बातचीत के लिए हमारे साथ स्टूडियो में मौजूद हैं, कंपनी की सीईओ गार्गी जी। गार्गी जी, आपने ऐसा क्यों किया...? कहीं जापानी कंपनी के.....।

(बीच में टोकते हुए)

गार्गी: ... निपुण को हमने बनाया था। वो आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस से लैस था। उसने हर रोज नई चीजें सीखीं और बुद्धिमान बनता गया। जिस काम को हम एक हफ्ते से ज्यादा वक्त में पूरा कर पाते, उसे वो एक घंटे में ही पूरा कर सकता था।

टीवी एंकर: ये तो बहुत शानदार बात है। लेकिन, आपने ऐसे होनहार रोबोट को नष्ट क्यों कर दिया।

गार्गी: ***(उदास स्वर)*** इंसान होने का मतलब ये नहीं कि वो सिर्फ बुद्धि की ही सुने... कभी-कभी दिल की भी सुननी पड़ती है।

टीवी एंकर: लेकिन वो रोबोट भी भावनाओं से परे तो था नहीं। लगाव... और दया भी तो कोई चीज है ना ?

गार्गी: **(उदास स्वर)** गुस्सा, बदला, भय, असुरक्षा ईर्ष्या.... ये सब भावनाएं ही तो हैं। एक इंसान के तौर पर हम सीखते हैं कि अपनी भावनाओं को कैसे काबू में रखे...। अपने जज़्बातों को की टकराहट को कैसे संभालें। बचपन में तो हमें आसानी से सही - गलत की पहचान सिखा दी जाती है। लेकिन बड़े होने पर हमें पता चलता है कि बीच में कुछ ऐसा धुंधला सा भी है... जो ना सही है और ना ही गलत।

टीवी एंकर: लेकिन एक रोबोट... चाहे वो कितना ही विकसित क्यों ना हो, ऐसे असमंजस में सही फैसला नहीं ले पाएगा। समझने की.. उसकी अपनी सीमाएं हैं।

गार्गी: हां.. बिल्कुल..। रोबोटिक आपरेशन तो बाइनरी सिस्टम ही समझते हैं। शून्य और एक... इनकी पूरी दुनिया, इन दो अंकों के इर्दगिर्द सिमटी है। “शायद” जैसी कोई चीज को रोबोट नहीं पहचानता। वो या “हां” कहेगा, या “ना”...। “शायद” शब्द उसकी समझ से परे है।

टीवी एंकर: “डीप लर्निंग” ने निपुण.. मेरा मतलब है उस क़ॉसी ह्यूमेनॉइड रोबोट के सामने जज़्बातों का पूरा खजाना बिखेर दिया।

गार्गी: हां, अगर मैं उसे नहीं रोकती, तो वो खुद को ही नष्ट कर लेता। निपुण का न्यूरल सर्किट ओवरलोड होकर एक अंधेरी सी सुरंग में फंस जाता। वो इसी भंवर में उलझ कर रह जाता कि आखिर प्यार जैसे खूबसूरत एहसास के साथ ईर्ष्या का कैसा मेल...। ये सब समझने की कोशिश में उसका सर्किट ओवरहीट होने लगता।

(आवाज़ लड़खड़ाने लगती है / पानी का घूंट लेकर गिलास को मेज पर रखती है)

गार्गी: निपुण.... मेरी बनाई हुई एक ऐसी रचना थी, जिसकी काबिलियत बेजोड़ थी... और इसीलिए मुझे भी उससे प्यार था। लेकिन सच तो ये है कि बेहद ऊंचे स्तर की आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस के बाद भी, कोई मशीन.. असल इंसान नहीं बन जाती।

टीवी एंकर: सही बात है...। हम सुपर तकनीक से लैस, बेहद समझदार रोबोट्स भले ही बना लें... लेकिन वास्तविक मनुष्य बनाने की ताकत अगर किसी में हैं... तो वो है... कुदरत ... हम सबकी "प्रकृति मां"।

गार्गी: जी, बिल्कुल।

----------Closing Music----------